“भारत का कर गया बेड़ा पार वो मस्ताना जोगी,
सोतों को कर गया फिर बेदार वो दयानंद जोगी|”

"वेदों की ओर लौटो" के आह्वान से लोगों में जागरूकता पैदा करने वाले,हिंदुओं को उनकी गौरवशाली विरासत और वैदिक ज्ञान के श्रेष्ठ मूल्य से अवगत कराने वाले, "शुद्धि आंदोलन" की स्थापना करने वाले, समाज में व्याप्त कुरीति और दूषणों से लोहा लेने वाले युगपुरुष स्वामी दयानंद सरस्वती जी की **200**वीं जयंती की हार्दिक शुभकामनाएँ | स्वामीजी ने समाज के नैतिक जीवन मूल्यों का उत्थान करने के साथ-साथ उनमें मौजूद अन्यायपूर्ण क्षतियाँ दूर करने के लिए प्रयास किए। मानवतावाद, समानता, नारी-विकास, एकता और भाईचारे की भावना को बल दिया। देश की आज़ादी के लिए निडरता से कटाक्षपूर्ण भाषण दिये।

गुरु-दक्षिणा में गुरुजी ने उनसे वेदों के ज्ञान द्वारा अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करने का प्रण लिया और गुरु को दिए प्रण को पूर्णता देने के लिए उन्होंने **10** अप्रैल **1875** को आर्यसमाज नामक समाजसुधारक आन्दोलन प्रारंभ कर दिया।आर्यसमाज वास्तव में एक राष्ट्रवादी आन्दोलन था जिसके द्वारा स्वामी जी ने जातिवाद, अशिक्षा, अन्धविश्वास और महिलाओं पर अत्याचारों के विरुद्ध सिंहनाद किया।आर्य समाज ने हिन्दू समाज की मुक्ति पर बल दिया। स्वामी दयानंद के अनुसार, केवल वेद ही सच्चे ज्ञान के भंडार और एकमात्र धर्म हैं |वेदों में अर्थशास्त्र, राजनीति, सामाजिक विज्ञान और मानविकी के सिद्धांत शामिल हैं।

वेद सभी सत्य विधाओं की पुस्तक है, वेदों को पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना सभी आर्यों का परम धर्म है।

स्वतंत्रता-पूर्व भारत में सामाजिक-धार्मिक परिवर्तन लाने में आर्य समाज का महत्वपूर्ण योगदान था। स्वामीजी मूर्ति पूजा, कर्मकांड, पशु बलि, बहुदेववाद की अवधारणा, स्वर्ग और नरक की अवधारणा और भाग्यवाद के घोर विरोधी थे।

आज हम अज्ञान और पाखंड के अन्धेरे से निकल कर जिस स्वतंत्र और आधुनिक भारत में सम्मानपूर्वक जी रहे है यह स्वामी दयानंद सरस्वती जैसे महापुरुषों की ही देन है। पूरा भारत देश और मानवसमाज स्वामी दयानंद सरस्वती के अमूल्य योगदान के लिए उनका आभारी रहेगा।